रंगों से जीवन रक्षा

नरेन्द्र देवांगन

रंग जीवों की रक्षा दो प्रकार से करते हैं। इनमें से पहले प्रकार के जीव रंगों की मदद से प्रकृति के साथ ऐसे घुल-मिल जाते हैं कि शिकारी इन्हें देख ही नहीं पाते। दूसरे प्रकार के जीव रंगों का इस्तेमाल चेतावनी देने के लिए करते हैं।

अगर जान की खैर चाहते हो तो हमसे दूर रहो, पास नहीं आना। चमकीले रंगों वाले अधिकांश जीव दूसरे जीवों को पास न फटकने देने के लिए रंगों की भाषा का उपयोग करते हैं। अपने शिकारियों को दूर रहने की चेतावनी देने के लिए प्रकृति ने अनेक जीवों को चमकीले रंगों से सजाया है।

रंग जीवों की दो प्रकार से रक्षा करते हैं। इनमें से पहले प्रकार के जीव रंगों की मदद से प्रकृति के साथ ऐसे घुल-मिल जाते हैं कि शिकारी इन जीवों को देख ही नहीं पाते। कीट जगत तो ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। दूसरे प्रकार के जीव रंगों का इस्तेमाल चेतावनी देने के लिए करते हैं। इन जीवों के भड़कीले रंगों का अर्थ होता है कि अगर कोई इन्हें खाएगा तो इनका ज़हर उसके लिए प्राणघातक हो सकता है। इसलिए अधिकांश शिकारी चटख रंगों वाले जीवों के निकट सम्बंधियों का शिकार भले ही कर लें, लेकिन वे इन चटख जीवों से दूर ही रहते हैं। देखा गया है कि चेतावनी-रंग वाले जीवों को हमेशा सुरक्षा नहीं मिलती। उनके चटख रंगों का अर्थ न समझने वाले शिकार उन पर गलती से हमला कर बैठते हैं। उनके हमले के बावजूद भड़कीले रंग वाले जीव आम तौर पर बच निकलते हैं। हां, इस हमले में वे घायल ज़रूर हो सकते हैं।

कोस्टा रिका में पाए जाने वाले हर्लिक्विन मेंढक के पूरे शरीर पर चमकीले पीले और काले रंग की पट्टियां बनी होती हैं। लाल रंग के पेट वाला यह मेंढक अत्यंत ज़हरीला होता है और शिकारी इससे दूर ही रहते हैं। इस मेंढक के ज़हर का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसका नाम ही ऐरो (तीर) मेंढक रख दिया गया है। यहां रहने वाले आदिवासी इन मेंढकों के ज़हर को अपने तीरों की नोंक पर लगाकर बड़े-बड़े जीवों का शिकार करते हैं। यह मेंढक अपने ज़हर के कारण काफी खतरनाक साबित होता है।

मध्य और दक्षिण अमरीका में पाए जाने वाले कोरल (मूंगा) सांप भी काफी ज़हरीले होते हैं। कोरल सांप एशिया, अफ्रीका और ईस्ट इंडीज़ में पाए जाने वाले सांपों के ही निकट सम्बंधी हैं। इस सांप के पूरे शरीर पर अलग-अलग रंग की गोल छल्लेदार पट्टियां पाई जाती हैं। इन पट्टियों के रंग चमकीले, लाल, काले और पीले होते हैं। यहां पाए जाने वाले कुछ अन्य सांपों के शरीर पर भी ऐसे ही रंगों की पट्टियां पाई जाती हैं। मज़े की बात है कि अनेक शिकारी जीव इन रंगों के कारण भ्रमित हो जाते हैं और इन्हें छोड़ दूसरे शिकार की तलाश में निकल जाते हैं।

भारत की प्रसिद्ध तितली कैलीमा आंख झपकते ही रंग बदल लेती है। उड़ते समय इसके फैले हुए पंख नीले रंग के रहते हैं, जिस पर एक सुनहरी पट्टी रहती है। यदि इसका पीछा किया जाए, तो यह अचानक अदृश्य हो जाती है, मानो हवा हो गई। अचम्भा होता है कि हुआ क्या और कैसे? जिस झाड़ी के निकट यह विलीन हुई प्रतीत होती है उसके पास ध्यान से देखने पर थोड़ी देर में कोई एक पत्ती किनारे पर फटती हुई लगेगी। देखते-देखते उसके दोनों किनारे अलग हो जाएंगे और बीच से गहरा नीला रंग दिखाई देने लगेगा। इस तितली के पंख के नीचे का रंग सूखी पत्ती के रंग से इतना मेल खाता है कि विशेषज्ञों तक को उलझन में डाल देता है। ठीक पत्ती के समान ही मध्य शिरा और वैसा ही शिरा विन्यास भी होता है। यहां तक कि मध्य भाग में कुछ धब्बे भी दिखाई पड़ते हैं, जो पत्तियों पर उपस्थित फफूंद के धब्बों से मेल खाते हैं। नीचे की ओर बढ़कर मध्य शिरा पत्ती के डंठल का रूप धारण कर लेती

है और जब तितली पौधे पर बैठती है तो लगता है कि टहनी से पत्ती निकल रही है।

मछलियां आम तौर पर कैलीफोर्निया के उथले पानी में पाए जाने वाले घोंघे (जैसे न्यूडिब्रांच) के पास जाना पसंद नहीं करतीं। अगर मछली गलती से इस जीव को खा ले, तो इसके कांटे इतने नुकीले होते हैं कि वह तुरंत इसे मुंह से बाहर निकालने में ही अपनी भलाई समझती हैं। एक बार इसके डंक का मज़ा चखने के बाद मछली न्यूडिब्रांच तो क्या, उसके जैसे दिखाई पड़ने वाले किसी अन्य जीव तक के पास नहीं जाती।

ऑस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला एटलस ज़हरीले पौधों को चटखारा ले-लेकर खाता है। इसलिए इसका पूरा शरीर ज़हर का एक चलता-फिरता भंडार बन जाता है।

अनेक पदार्थ कुछ जीवों के लिए हानिरहित होते हैं, लेकिन वही पदार्थ अन्य जीवों के लिए घातक साबित हो सकते हैं। ऑस्ट्रेलिया और इसके आसपास के द्वीपों में पाए जाने वाले नीले पट्टीदार ऑक्टोपस का आकार भले ही एक बॉल से थोड़ा-सा बड़ा क्यों न हो, लेकिन इसका ज़हर बेहद खतरनाक होता है। इतना खतरनाक कि इसके ज़हरीले डंक से आदमी की मौत भी हो सकती है। अपने चमकीले रंगों के माध्यम से ऑक्टोपस दूसरे जीवों को अपने पास नहीं आने का सिग्नल देता है।

भय की आशंका से कुछ पक्षी ऐसा आसन ग्रहण कर लेते हैं जिससे ये शत्रु को दिखाई न दें। इससे यह भी सिद्ध होता है कि ये अपने शरीर के रंग के परिणाम को जानते हैं। बीटर्न नामक पक्षी भय का संकेत पाते ही अपनी चोंच को आकाश की ओर उठाए, अपने शरीर को ऊर्ध्वाधर दिशा में इस तरह स्थिर करके खड़ा हो जाता है कि उसके नीचे वाला भाग शत्रु की ओर रहे। इसके शरीर के नीचे के भाग का रंग हल्का पीला होता है और गर्दन तथा सीने पर काली, खड़ी रेखाएं होती हैं। दूर से इसका रंग सरकंडे की शाखाओं के बीच से झांकती हुई प्रकाश की किरणों जैसा हो जाता है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप यह शत्रु की दृष्टि से ओझल हो जाता है।

हैलिकोनियस परिवार की पैशन वाइन तितली के शरीर में इतना ज़हर भरा होता है कि वे किसी सायनाइड कैप्सूल से कम नहीं होतीं। यही कारण है कि पक्षी भूलकर भी इन तितलियों का शिकार नहीं करते। अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए कुछ दूसरी तितलियों ने भी रंग-रूप पैशन वाइन तितलियों के समान बना लिया है। अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए यही सबसे सुरक्षित तरीका है। ***(स्रोत फीचर्स)***